

इस्लाम प्रश्न और उत्तर

जनरल पर्यवेक्षक : शैख मुहम्मद सालेह
अल-मुनज्जिद

70507 - क्या तीव्र ठंड के दिनों में जनाबत से तयम्मूम करने की अनुमति है ?

प्रश्न

क्या मैं तीव्र ठंड के दिनों में जनाबत की हालत में तयम्मूम के द्वारा नमाज़ पढ़ सकता हूँ? ज्ञात रहे कि मेरे पास तुरंत पवित्रता प्राप्त करने की संभावनाएं नहीं हैं। तथा मैं अपनी पीठ में ठंड की बीमारी से पीड़ित हूँ, जो मुझे बहुत ज्यादा प्रभावित करती है।

विस्तृत उत्तर

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह तआला के लिए योग्य है।

जिस व्यक्ति को जनाबत लग गई है और वह नमाज़ पढ़ने का इरादा रखता है तो उसके लिए अनिवार्य है कि वह पानी से स्नान करे। क्योंकि अल्लाह तआला का कथन है:

وَإِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوا الْمَائِدَةَ : 6

"यदि तुम जनाबत की हालत में हो तो स्नान करो।" (सूरतुल मायदा: 6)

यदि वह पानी का प्रयोग करने में असमर्थ है, क्योंकि वह उपलब्ध नहीं है, या पना उपलब्ध है परंतु उसके इस्तेमाल करने में उसे हानि पहुँचने का खतरा है; क्योंकि वह बीमार है, अथवा तीव्र ठंड है – और उसके पास उसे गरम करने के लिए कोई चीज़ नहीं है, तो ऐसी स्थिति में वह पानी से स्नान करने के बजाय मिट्टी से तयुम्म करेगा। क्योंकि अल्लाह तआला का कथन है:

وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ أَوْ لَامَسْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا

المائدة : 6

“यदि तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुम में से कोई शौच करके आया हो, या तुम स्त्रियों से मिले हो (संभोग किया हो), फिर तुम्हें पानी न मिले तो पाक मिट्टी से तयम्मूम कर लो।” (सूरतुल मायदा: 6)

इस्लाम प्रश्न और उत्तर

जनरल पर्यवेक्षक : शैख मुहम्मद सालेह
अल-मुनज्जिद

इस आयत में इस बात का प्रमाण है कि वह रोगी जिसे पानी के उपयोग से नुकसान पहुँचता है जैसे कि स्नान करना मौत का कारण बन सकता है, या उसके रोग को बढ़ाने या उसके ठीक होने में देरी का कारण बन सकता हो, तो वह तयम्मुम करेगा। अल्लाह तआला ने तयम्मुम का तरीका भी वर्णन किया है। अल्लाह ने फरमाया:

فَامَسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ مِنْهُ الْمائدة : 6

"उसे अपने चेहरों पर और हाथों पर मल लो।" (सूरतुल मायदा: 6)

अल्लाह सर्वशक्तिमान ने इस प्रावधान (नियम) की हिक्मत को स्पष्ट करते हुए फरमाया:

مَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ حَرَجٍ وَلَكِنْ يُرِيدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ الْمائدة : 6

"अल्लाह तआला तुम पर किसी किसिम की तंगी नहीं डालना चाहता। अपितु वह चाहता है कि तुम्हें पवित्र करे और तुम्हें अपनी भरपूर नेमत प्रदान करे, ताकि तुम कृतज्ञ बनो।" (सूरतुल मायदा: 6).

अम्र बिन अल-आस रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि उन्होंने ने फरमाया: मुझे "ज़ातुस्सलासिल" के युद्ध के अवसर पर एक ठंडी रात में स्वपनदोष हो गया। मुझे यह डर लगा कि यदि मैंने स्नान कर लिया तो मैं मर जाऊँगा। अतः मैंने तयम्मुम कर लिया और अपने साथियों को सुबह की नमाज़ पढ़ाई। लोगों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इसका चर्चा किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: हे अम्र, तू ने अपने साथियों को जनाबत की हालत में नमाज़ पढ़ाई है? चुनाँचे मैंने आप को उस चीज़ के बारे में बता दिया जिसने मुझे स्नान करने से रोक दिया था और मैंने कहा : मैंने अल्लाह तआला के इस कथन को सुना है :

وَلَا تَقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا النساء: 29

"और अपने आपकी हत्या न करो। नि:संदेह अल्लाह तुमपर बहुत दयावान है।" (सूरतुन निसा: 29)

तो इसपर अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हँस पड़े और कुछ नहीं कहा।

इसे अबू दाऊद (हदीस समख्या: 334) ने रिवायत किया है और शैख अल्बानी ने "सहीह अबू दाऊद" में इसे सहीह कहा है।

हाफ़िज़ इब्न हजर रहिमहुल्लाह ने फरमाया:

इस्लाम प्रश्न और उत्तर

जनरल पर्यवेक्षक : शैख मुहम्मद सालेह
अल-मुनज्जिद

आपको चाहिए कि अपने शरीर का जितना भाग धो सकते हैं उसे धोएं, जैसे कि आप दोनों हाथों, दोनों पैरों और ऐसे ही अन्य अंगों को धोएं, यदि उसमें आप के लिए कोई नुकसान न हो, फिर तयम्मुम करें।

हम आपके त्वरित आरोग्य के लिए अल्लाह से प्रश्न करते हैं, और यह कि आपको जो कष्ट पहुँची है उसे आपके लिए कफ़ारा (परायश्चित्त) बना दे और आपके पद को बढ़ा दे।

और अल्लाह तआला ही सबसे अधिक ज्ञान रखता है।